PDF : अक्लेश केशव शरणम्
Aklesh Book Coolection

* श्रीहनूमते नमः *

श्री हनुमान चालीसा

सन् १९९३

दोहा

श्रीगुरु चरन सरोज रज
निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु
जो दायकु फल चारि ।।
बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहि,
हरहु कलेस बिकार ।।

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।।
राम दूत अतुलित बल धामा ।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी ।
कुमति निवार सुमति के संगी ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा ।

कानन कुंडल कुंचित केसा ।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।
काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।
संकर सुवन केसरीनंदन ।
तेज प्रताप महा जग बंदन ।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर ।
राम काज करिबे को आतुर ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया ।
राम लषन सीता मन बसिया ।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।
बिकट रूप धरि लंक जरावा ।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे ।
रामचंद्र कें काज सँवारे ।।
लाय सजीवन लखन जियाये ।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई ।

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं ।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।
नारद सारद सहित अहीसा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा ।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।
तुम्हरो मन्त्र बिभीषन माना ।
लंकेस्वर भए सब जग जाना ।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू ।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।
दुर्गम काज जगत के जेते ।

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।
राम दुआरे तुम रखवारे ।
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।
तुम रच्छक काहू को डर ना ।।
आपन तेज सम्हारो आपै ।
तीनों लोक हाँक तें काँपै ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।
महाबीर जब नाम सुनावै ।।
नासै रोग हरै सब पीरा ।
जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट तें हनुमान छुड़ावै ।
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।
सब पर राम तपस्वी राजा ।
तिन के काज सकल तुम साजा ।।
और मनोरथ जो कोइ लावै ।

सोइ अमित जीवन फल पावै ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा ।
है परसिद्ध जगत उजियारा ।।
साधु संत के तुम रखवारे ।
असुर निकंदन राम दुलारे ।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता ।
अस बर दीन जानकी माता ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा ।
सदा रहो रघुपति के दासा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावै ।
जनम जनम के दुख बिसरावै ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई ।
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।।
और देवता चित्त न धरई ।
हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा ।

जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं ।
कृपा करहु गुरु देव की नाईं ।।
जो सत बार पाठ कर कोई ।
छुटहि बंदि महा सुख होई ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।
होय सिद्धि, साखी गौरीसा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा ।
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ।।

दोहा

पवनतनय संकट हरन,
मंगल मूरति रूप ।
राम लषन सीता सहित,
हृदय बसहु सुर भूप ।।

।। इति ।।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

मत्तगयन्द छन्द

बाल समय रबि भक्षि लिये तब
तीनहुँ लोक भयो अँधियारो ।
ताहि सों त्रास भयो जग को
यह संकट काहु सों जात न टारो ।।
देवन आनि करी बिनती तब
छाँड़ि दियो रबि कष्ट निवारो ।
को नहिं जानत है जग में कपि
संकटमोचन नाम तिहारो ।।१।।
बालि की त्रास कपीस बसै गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो ।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब
चाहिय कौन बिचार बिचारो ।।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु

सो तुम दास के सोक निवारो को ।।२।।
अंगद के सँग लेन गये सिय
खोज कपीस यह बैन उचारो ।
जीवत ना बचिहौ हम सों जु
बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो ।।
हेरि थके तट सिंधु सबै तब लाय
सिया-सुधि प्रान उबारो को ।।३।।
रावन त्रास दई सिय को सब
राक्षसि सों कहि सोक निवारो ।
ताहि समय हनुमान महाप्रभु
जाय महा रजनीचर मारो ।।
चाहत सीय असोक सों आगि सु
दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो को ।।४।।
बान लग्यो उर लछिमन के तब
प्रान तजे सुत रावन मारो ।
लै गृह बैद्य सुषेन समेत

तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो ।।
आनि सजीवन हाथ दई तब
लछिमन के तुम प्रान उबारो को ।।५।।
रावन जुद्ध अजान कियो तब
नाग कि फाँस सबै सिर डारो ।
श्रीरघुनाथ समेत सबै दल
मोह भयो यह संकट भारो ।।
आनि खगेस तबै हनुमान जु
बंधन काटि सुत्रास निवारो को ।।६।।
बंधु समेत जबै अहिरावन
लै रघुनाथ पताल सिधारो ।
देबिहिं पूजि भली बिधि सों बलि
देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो ।।
जाय सहाय भयो तब ही
अहिरावन सैन्य समेत सँहारो को ।।७।।
काज किये बड़ देवन के तुम

बीर महाप्रभु देखि बिचारो ।
कौन सो संकट मोर गरीब को
जो तुमसों नहिं जात है टारो ।।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु
जो कछु संकट होय हमारो का ।।८।।

लाल देह लाली लसे, (दोहा)
अरु धरि लाल लँगूर ।
बज्र देह दानव दलन,
जय जय जय कपि सूर ।।

बजरंग-बाण

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते,
बिनय करै सनमान ।
तेहि के कारज सकल सुभ,
सिद्ध करैं हनुमान ।।

चौपाई

जयं हनुमंत संत-हितकारी ।
सुनि लीजै प्रभु बिनय हमारी ।।
जन के काज बिलंब न कीजै ।
आतुर दौरि महासुख दीजै ।।
जैसे कूदि सिंधु के पारा ।
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा ।।

आगे जाय लंकिनी रोका ।
मारेहु लात गई सुरलोका ।।
जय बिभीषन को सुख दीन्हा ।
सीता निरखि परम-पद लीन्हा ।।
बाग उजारि सिंधु महँ बोरा ।
अति आतुर जमकातर तोरा ।।
अछय कुमार मारि संहारा ।
लूम लपेटि लंक को जारा ।।

लाह समान लंक जरि गई ।
जय जय धुनि सुरपुर नभ भई ।।
अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी ।
कृपा करहु उर अंतरजामी ।।
जय जय लखन प्रान के दाता ।
आतुर ह्वैदुख करहु निपाता ।।
जय हनुमान जयति बल-सागर ।
सुर-समूह-समरथ भट-नागर ।।

ॐ हनुहनु हनु हनुमंत हठीले ।
बैरिहि मारु बज्र की कीले ।।
ॐ हीं हीं हीं हनुमंत कपीसा ।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर-सीसा ।।
जय अंजनिकुमार बलवंता ।
संकरसुवन बीर हनुमंता ।।
बदन कराल काल-कुल-घालक ।
राम - सहाय सदा प्रतिपालक ।।

भूत, प्रेत, पिसाच, निसाचर ।
अगनि बेताल काल मारी मर ।।
इन्हें मारु, तोहि सपथ राम की ।
राखु नाथ मरजाद नाम की ।।
सत्य होहु हरि सपथ पाइ कै ।
रामदूत धरु मारु धाइ कै ।।
जय जय जय हनुमंत अगाधा ।
दुख पावत जन केहि अपराधा ।।

पूजा जप तप नेम अचारा ।
नहि जानत कछु दास तुम्हारा ।।
बन उपबन मग गिरि गृह माहीं ।
तुम्हरे बल हौं डरपत नाहीं ।।
जनकसुता-हरि-दास कहावौ ।
ता की सपथ, बिलंब न लावौ ।।
जय-जय-जय-धुनि होत अकासा ।
सुमिरत होय दुसह दुख नासा ।।

चरन पकरि, कर जोरि मनावौं ।
यहि औसर अब केहि गोहरावौं ।।
उठ, उठ, चलु, तोहि राम दोहाई ।
पायँ परौं, कर जोरि मनाई ।।
ॐ चम चम चम चम चपल चलंता ।
ॐ हनु हनु हनु हनु हनु-हनुमंता ।।
ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल ।
ॐ सं सं सहमि पराने खल-दल ।।

अपने जन को तुरत उबारौ ।
सुमिरत होय अनंद हमारौ ।।
यह बजरंग-बाण जेहि मारै ।
ताहि कहौ फिरि कवन उबारै ।।
पाठ करै बजरंग-बाण की ।
हनुमत रच्छा करैं प्रान की ।।
यह बजरंग-बाण जो जापैं ।
तासों भूत-प्रेत सब काँपै ।।

धूप देय जो जपै हमेसा ।
ता के तन नहिं रहै कलेसा ।।

दो.- उर प्रतीति दृढ़, सरनू है,

पाठ करै धरि ध्यान ।
बाधा सब हर,
करै सब काम सफल हनुमान ।।

नाम संकीर्तन

श्री राम जय राम जय जय राम ।
श्री राम जय राम जय जय राम ।।
जय बजंरगी जय हनुमान ।
संकट मोचन कृपा - कृपा निदान ।।
सब जन मिलकर करो पुकार ।
जय मारुति सुत जय हनुमान ।।

।। इति शुभम् ।।

राम नाम लेखन
एवं
संकीर्तन मंडल

कालीबाड़ी, बरेली

श्री हनुमान चालीसा

संस्थापक शत्रुहनदास